

मनोज

कॉमिक्स

संख्या 749 मूल्य 6.00

हवलदार बहादुर और सोनै के तख्तर



चित्रांकन : बेदी

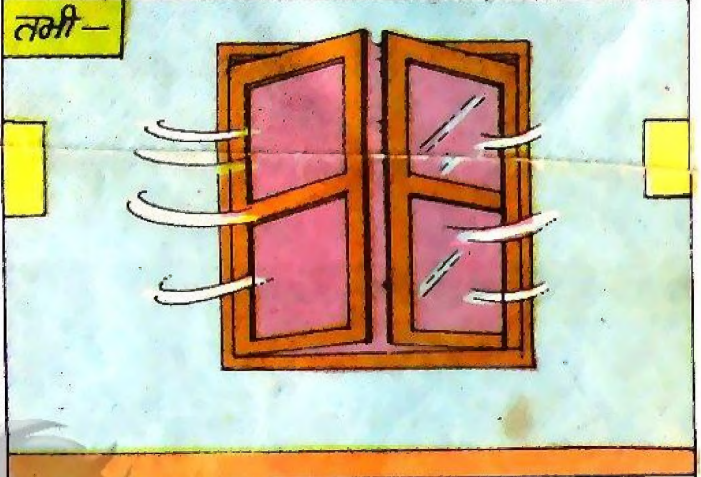
लेखक : विनय प्रभाकर

हवलदार बहादुर और सोने के तस्कर

कमरे में मद्धिम प्रकाश था। बिस्तर पर लेटी हुई युवती गहरी नींद का आनंद ले रही थी।



तभी—



एक नकाबपोश ने भीतर झांका—

सो रही है।
बिस्तर पर
लेटते वक्त
इसने सोचा
भी नहीं होगा
कि कल की
सुबह देखना
इसके भाग्य
में नहीं
है।



वह छिड़की पर चढ़कर भीतर कूद गया।



और जेब से बड़े फलवाला चाकू निकालकर खोला।

एक ही बार में गारदन अलग
कर दूंगा।



मरने के लिए तैयार
हो जा।







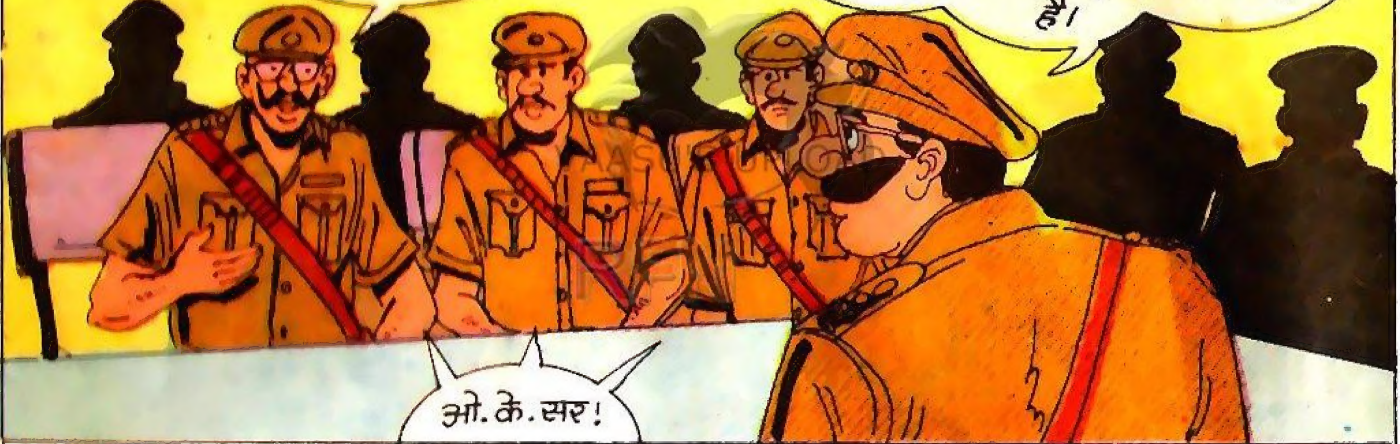
उधर
पुलिस
हेडक्वार्टर
में कमिशनर
साहब
क्षेत्र के
सभी
ऑफिसर्स
को
सूचना
दे
रहे
थे—

चार पेट्टी सोना
पाकिस्तान की सीमा
से तस्करी करके लाया
गया है। सोना बिस्कुटों
की शक्ल में है। मुझे
मिली सूचना के अनुसार
यह सोना बम्बई ले जाया
जाएगा। आज या कल में
ही तस्करी का यह सोना
हमारे शहर में आने वाला
है। यहीं से इसे सबक
मार्ग से या फिर रेल
द्वारा बम्बई भेजा
जाना है।



फिर तो हमें शहर में आने
वाले सभी रास्तों पर चौकसी
बढ़ा देनी चाहिए सर!

हां। शहर के प्रवेश मार्गों पर स्थित
सभी चेकपोस्ट्स, रेलवे स्टेशन और बस
अड्डों पर आप लोवा खुद नजर रखिए।
हमें वह सोना हर हालत में पकड़ना
है।



ओ.के. सर!

अबाली
सुबह—
ही...ही...ही!
क्या मैं...म...
मेरा मतलब
है, मैं आई कम इन
सर?

दांत बंद करो
और सीधी तरह
आकर बताओ,
क्या काम है
मुझसे?



यह दरकवास्त देनी है साहब!
आप इस पर अपना सिफारशी
नोट लगाकर ऊपर भिजवा
दीजिए।

दरकवास्त!
क्या लिखा
है इसमें?



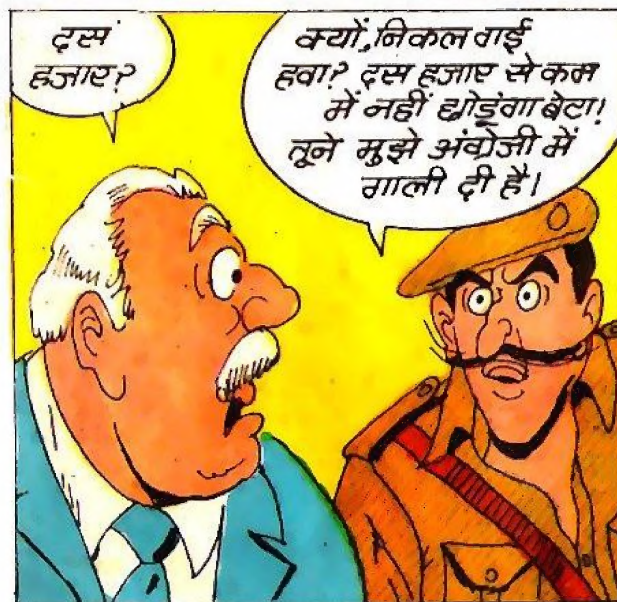
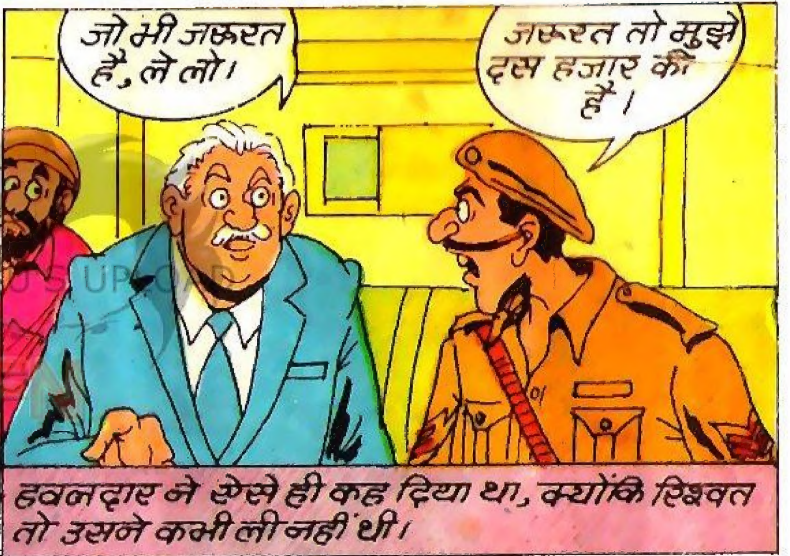






दोनों सिपाही ट्रक में घुस गए और हवलदार बहादुर ने ट्रक के चारों ओर एक चक्कर लगाया था। तभी उसकी नजर टूटी हुई हैडलाइट पर पड़ी।







बाहर पहुंचकर दक वाला सीधा सेंटीकल प्लान डिपार्टमेंट पहुंचा और एक अधिकारी को सारी बात बताई ।



लेकिन यह वह ट्रक नहीं था। "गरीब ट्रांसपोर्ट" नामक किसी कंपनी का यह ट्रक बैरियर के निकट आकर रुक गया।



सिपाहियो !
तलाबी लो।

सिपाही तलाबी लेने में व्यस्त हो गए। खड़ा सिंह बैरियर से टेक लगाए खड़ा था।



तुम यहां क्यों खड़े
हो ? ट्रक के पीछे
जाकर देखो।

अच्छा
साहब !

हवलदार पीछे पहुंचे तो दोनों सिपाही ट्रक से उतर रहे थे।

कुछ नहीं है
हवलदार जी !



ठीक है। जाकर
साहब को बता
दो।

तभी—



मर गया। यह
तो वही है।

घट...
घट...

सलाम हवलदार जी ! आपकी चीज ले आया हूं।



अी...
चुप।

ट्रक वाला नीचे उतरा और जेब से स्कं लिफाफा निकालकर हवलदार की ओर बढ़ा दिया।



लो हवलदार
जी !

स... सुनो
तो...।

मगर लिफाफा पकड़ाने के बाद वह तुरंत ही धूमकर अपने ट्रक की ओर चला गया। हवलदार बहादुर लिफाफा हाथ में लिए परवानसे खड़े रह गये।

कहां रखूं इसे? अगर खड़वासिंह ने देख लिया तो मुश्किल आ जाएगी।



तभी—

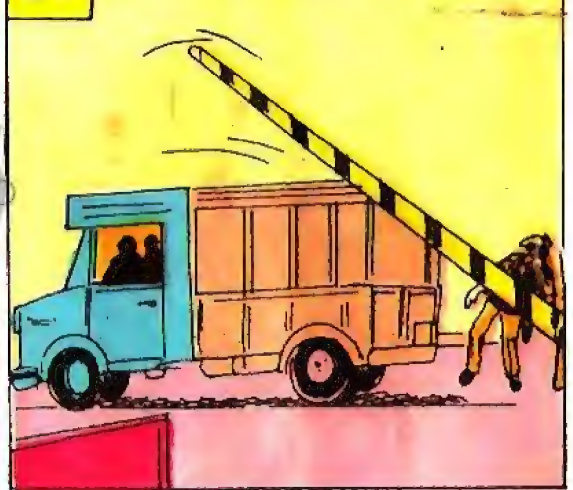
आह!



अब हवलदार बहादुर इतने सुर्ख भी नहीं थे कि स्थिति को न समझते। इस तरह के टायों में वह खुद कई बार सट्टीकरण वालों के साथ रह चुके थे। घबराहट में उनकी समझ में और कुछ तो नहीं आया, बस उन्होंने आगे खड़े ट्रक की नम्बर प्लेट के पीछे नोटों का लिफाफा ठूस दिया।



ठीक उसी वक्त अगले ट्रक को पास करने के लिए बैरियर उठाया गया था।



और वह ट्रक तेजी से खाना हो गया।

गरीब ट्रांसपोर्ट सम. बी.डी. 1417.



किसी ने भी हवलदार को लिफाफा ह्वाते नहीं देखा था।

तभी—

अरे-अरे! क्या करते हो भाई?

हमें तुम्हारी तलाशी लेनी है।



यह दृश्य देखकर स्वर्णसिंह जन्दी से निकट आया।

क्या बात है?

इंस्पेक्टर! माई नेम इज गोरीबंकर! आई एम फ्रॉम सेंटीकल्बान डिपार्टमेंट। आपके इस हवलदार पर रिक्वैर करने का आरोप है।



रिक्वैर! यह आप क्या कह रहे हैं? हवलदार बहादुर कभी ऐसा नहीं कर सकता।

इसने किया है साहब! मैंने अभी इसे एक लिफाफा दिया है, जिसमें पूरे दस हजार रुपये हैं।



यह झूठ बोल रहा है साहब! मेरे पास कोई लिफाफा नहीं है। मुझे छोड़ दी।

पहले तुम्हारी तलाशी ली जाएगी।

उस अधिकारी ने खुद हवलदार बहादुर की तलाशी ली।

इसके पास तो लिफाफा नहीं है।

अट्ठी तरफ देखिए साहब! मैंने अपने हाथों से इसे लिफाफा दिया है।



मगर लिफाफा होता तो मिलता।

कमाल हो गया! तुम कहते हो लिफाफा इसे दिया है, मगर इसके पास तो कुछ नहीं है। फिर लिफाफा कहाँ गया?

इस आदमी ने मुझ पर झूठा आरोप लगाया है सर!



हमारा हवलदार ठीक कह रहा है मिस्टर गोरीबंकर! यह आदमी झूठ है। हवलदार की तलाशी लेने के बाद यह बात साबित हो चुकी है।

मैं झूठ क्यों बोलूंगा साहब? मुझे क्या शौक था अपने दस हजार गंवाने का? पता नहीं मेरा रुपया कहाँ गया?





मुसीबत टल जाने से हवलदार बहुत खुश था।

अब तो कोई खतरा ही नहीं है। शाम को इग्ली के बाद गरीब ट्रांसपोर्ट पर जाऊंगा। उस ट्रक से लिफाफा निकालूंगा और बाजार जाकर कलर टी. वी. खरीदूंगा। चम्पाकली को हैरान कर दूंगा आज।

हो...
हो... ही...
ही...!

क्या पागल हो गए हो? इस तरह हंसने का क्या मतलब है?

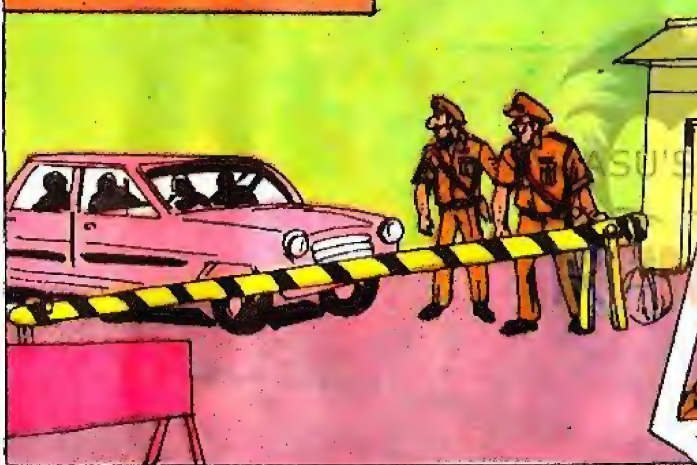
म... माफ करना साहिब! ऐसे ही आ गई थी, हंसी! ही... ही... ही...!

सोच में डूबे हुए हवलदार बहादुर खिलखिलाकर हंस पड़े।

खड्गसिंह क्रोध में कुछ कहने ही वाला था कि तभी एक कार आकर रुकी।

कार की अच्छी तरह तलाशी लेना हवलदार!

अभी लेता हूँ जी!



हवलदार ने पहले कार के अंदर झांककर देखा।

ओय! कोई सोना-वोना तो नहीं है तुम्हारे पास?

नहीं जी!

अभी पता लग जाएगा। एक बंदा नीचे आकर डिकी खोलो।



जो युवक नीचे उतरा था, वह दीला-ढाला कोट पहने हुए था। हवलदार बहादुर के साथ पीछे जाकर उसने डिकी खोली—

इन पैटियों में क्या है?

सोना।





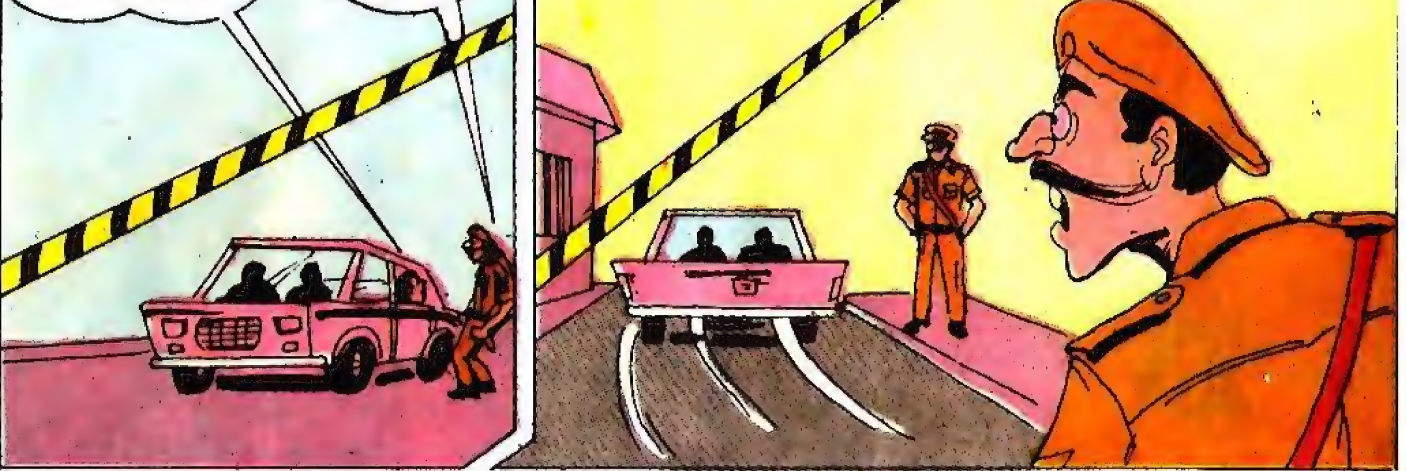
हवलदार बहादुर और सोने के तस्क़र

युवक जल्दी से कार में जा बैठा।

कार तेजी से रवाना हो गई।

मेरी बात याद रखना हवलदार!

आं... हां... हां।



हवलदार की हालत देखकर खड़वासिंह उसके निकट आया।

ऐ भाई! क्या हुआ तुझे? मुंह बंद कर ले, वरना कोई मक्खी घुस जाएगी।



वह कार अब नजरो से ओझल हो चुकी थी।

कोट की जेब में परखचे उड़ा देगा साला। बू... हू... हू...!

क्या बक रहे हो तुम? किस बम की बात कर रहे हो?



अब हवलदार ने उसे पूरी बात बताई।

बम।

क्या SSS? कहाँ है बम?



पूरी बात सुनकर खड़वासिंह मारे क्रोध के मुँक ला उठा।

ई...ई...ई! यू इंडियट... फूल... गधे... तुमने उन तस्क़रो को निकल जाने दिया?

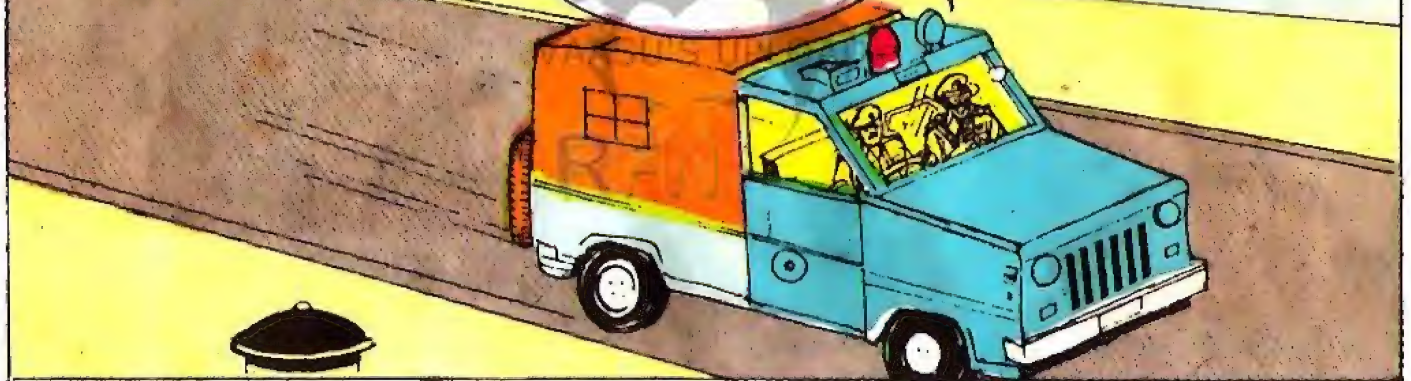
अगर रोकता तो वह आपको भी बम से उड़ा देते साहब!



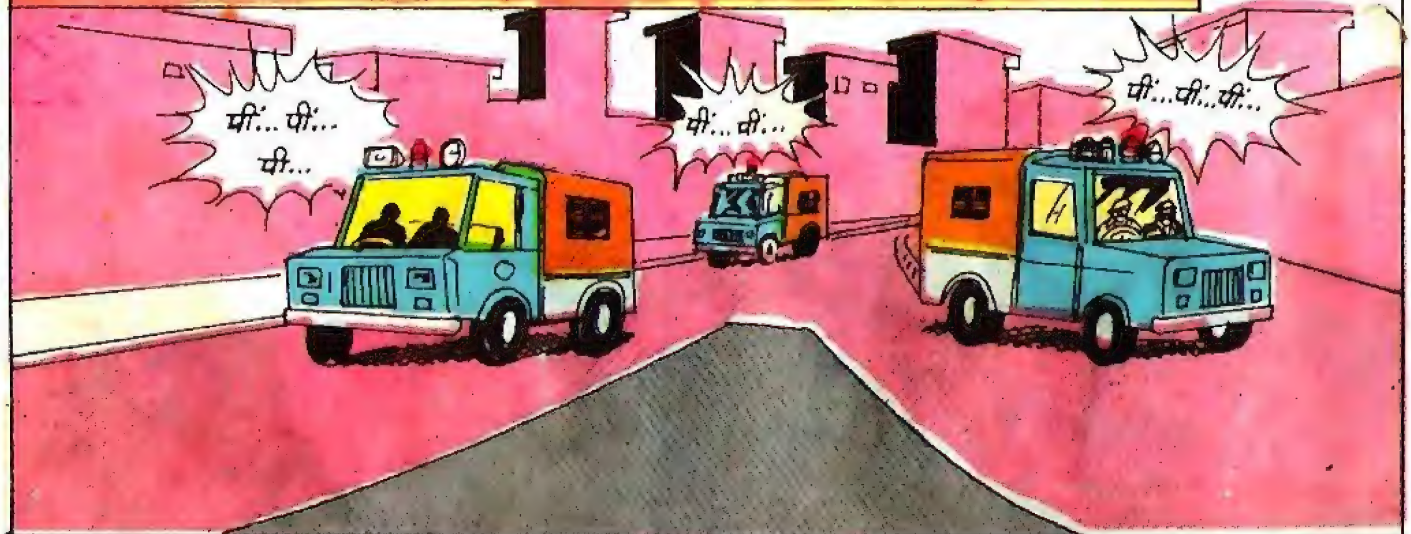


शहर की ओर जाते हुए खड़गसिंह ने वायरलेस पर उस कार के विषय में संदेश भी प्रसारित कर दिया। गुलाबी फिस्ट कार है। उसमें चार युवक बैठे हैं, जो तरकरी का सोना लेकर शहर में घुसे हैं।

दोनों सिपाहियों को साथ लेकर खड़गसिंह उस कार के पीछे खाना होवाया।



संदेश मिलते ही पुलिस की गाड़ियां गुलाबी फिस्ट कार की तलाश में दौड़ पड़ी थीं।



मगर वह बदमाश पकड़े नहीं जा सके। कमिश्नर को रिपोर्ट देते हुए खड्गसिंह ने हवलदार बहादुर की शिकायत भी कर दी थी और कमिश्नर के सामने हवलदार की पेशी हो गई।

हवलदार बहादुर! तुम्हारे कारण वह तस्कर पुलिस के हाथों से बच निकले। तुमने पुलिस डिपार्टमेंट की नाक कटवा दी है।

गलती हो गई हुजूर! मगर उनके पास बस था।

बस फोड़ना आसान नहीं होता मूर्ख! क्या बदमाशों को अपनी जान की चिंता नहीं थी? वह तुम्हें डरा रहा था। तुम्हें अपने अफसर को सूचना देनी चाहिए थी।

आगे से जरूर दे दूंगा सर! अब तो माफ कर दीजिए।

माफी की गुंजाइश नहीं है। फिलहाल तो मैं तस्करों को पकड़ने में व्यस्त हूँ। इस केस के बाद सोचा जाएगा कि तुम्हें डिसमिस कर दिया जाएगा या नहीं? अब जाओ।

ठ... ठीक है हुजूर!

कमिश्नर के दफतर से निकलने के बाद हवलदार बहादुर गरीब ट्रांसपोर्ट कम्पनी की तलाश में निकल पड़े।

ऐसी गलती तो कई बार हो चुकी है। कमिश्नर साहब बहुत अच्छे आदमी हैं, वह मुझे जरूर माफ कर देंगे। फिलहाल तो मुझे उन दस हजार की चिंता है।



एक खाली रिक्शा देखकर वह उसमें बैठ गया।

रिक्शा खाली नहीं है साहब!

हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा साले। मुझे अंधा समझता है। सीधी तरह रूपनगर चल।



रिक्शा वाले ने मन ही मन दस-बीस गालियां ठोंकी और रिक्शा आगे बढ़ा दिया।

रूपनगर में कहां जाओ हवलदार?

गरीब ट्रांसपोर्ट कंपनी जाना है। रूपनगर पहुंचकर दूढ़ लेवो।



गरीब ट्रांसपोर्ट काफी बड़ी कंपनी थी, सो उन्हें दूढ़ने में कोई खास दिक्कत नहीं हुई।



किराया लेगा क्या?

अगर दे देंगे तो मेरी नजर में पुलिस वालों का सम्मान बढ़ जाएगा साहब!



हवलदार ने दो रुपये का नोट उसके हाथ में पकड़ाया था, जबकि वहां तक का किराया दस रुपये से कम नहीं बनता था।

ले पकड़। ठीक है न?

हां जी! आपको याद रखने के लिए ठीक है।

साला, उल्लू का पट्टा।



तो जा, ऐसा कर और पीठ पीछे गालियां देने का इरादा हो तो इतना धुन ले कि मैंने तुझे उसी हिसाब से किराया दिया है, जिस हिसाब से सरकार हमें वेतन देती है, इस लिए गालियां दोगे तो वह सीधी सरकार के खाले में जाएगी और मैं सरकार को बुरा-मला कहने वाले को माफ नहीं किया करता। समझ गये?

समझ गया साहब!



ट्रांसपोर्ट के दफ्तर में जाने की बजाय हवलदार पार्किंग में खड़े ट्रकों के निकट पहुंचे।

क्या नम्बर था?
हां, एस. बी. डी.
1417



लेकिन वहां खड़े ट्रकों में उस नम्बर का ट्रक नहीं था।

अब क्या
करूं?

आंख! यह
युलिसिया यहाँ
क्यों आया
है?



ट्रांसपोर्ट के कर्मचारी ने उन्हें ट्रकों की लाक-
आंक करते देखा...

... और दौड़कर दफ्तर में पहुंच गया।

साहब! बाहर एक हवलदार
घूम रहा है और हमारे ट्रकों
में कुछ तलाश भी कर
रहा है।

हवलदार क्यों
आया है? जा,
उसे यहाँ बुला
लो।



कर्मचारी वापस पहुंचा।

नमस्ते
हवलदार जी!

क...
कोन है?



हा... हा... हा!
आप तो डर
गए।

अबे ओ, मुंह बंद कर ले, वरना
यह डंडा मुंह में घुसेड़कर दूसरी
तरफ से बाहर निकाल दूंगा।
पीछे से नमस्ते क्यों की?
गुर्र... गुर्र...!



गलती हो गई झुजूर!
अब आगे से करता हूं।
चलिए, आपको मैनेजर
साहब ने बुलाया है।

मैनेजर ने?
अच्छा चल,
उसे भी देख
लेता हूं।







अचानक ही चम्पाकली के तेवर बदल गए।

इधर लोओ
स्वाना।

अरे-अरे! ये
क्या कर रही
हो?



तुम्हें शर्म नहीं आई
खिचत लेते हुए! हराम
की कमाई से टी.वी.
लाकर दोगे मुझे। जी
चाहता है, बेलन लाकर
खोपड़ी तोड़ दूँ
तुम्हारी।

तेरा हिसाब भी
निराला है चम्पा!
टी.वी. न लाता तो
गला घोट देती और
अबला रखा हूँ तो
खोपड़ी फोड़ रही
हैं।



मुझे पाप की कमाई
की कोई भी चीज अपने घर
में नहीं चाहिए। समझे! और
जरा यह तो सोचो, अगर खिचत लेते
पकड़े जाते तो क्या होता? देखो
जी, गुस्सा करने की तो मेरी आदत
है, लेकिन इसका मतलब यह
तो नहीं कि मेरे गुस्से से डरकर
तुम पाप करने लगो। वह रुपये
द्रक से निकालकर उसके
मालिक को वापस कर आना।
हम अपना पुराना टी.वी.
ही ठीक करा
लेंगे।



तेरी बात झुनकर बड़ी खुशी
हुई प्राण प्यारी! रुपया मांगने
के बाद मैं खुद भी अपने आपसे
लज्जित था, लेकिन अब वह
रुपया उसके मालिक को
वापस करने गया तो पकड़ा
जाऊंगा।

तो ठीक है। तुम
रुपये द्रक से निकाल
लाना। हम वह
रुपया मरीब
जरूरतमंदों में
बाँट देंगे।

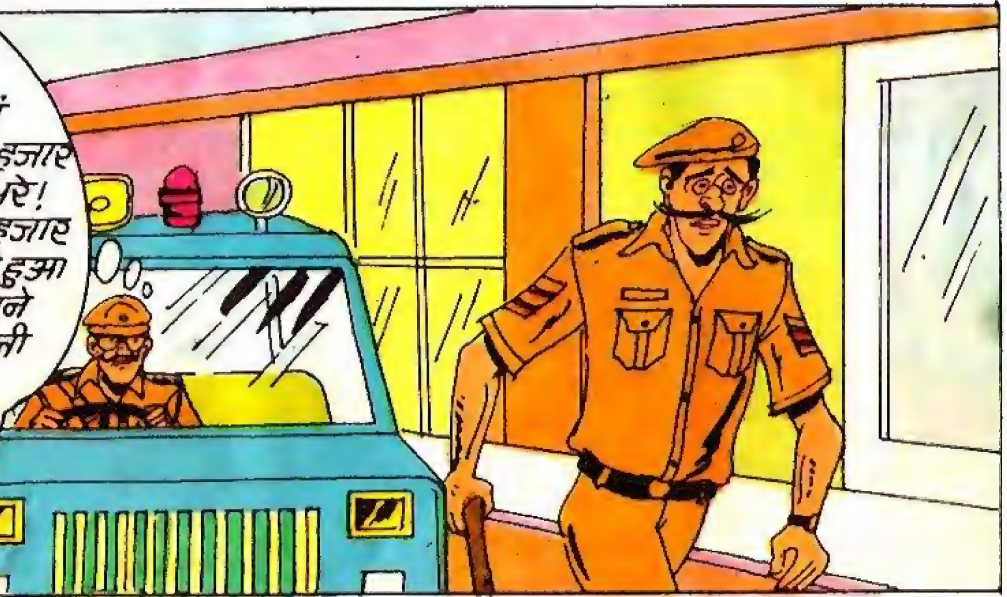
आज तो तुमझे
मोटी भैंस नहीं,
बल्कि कोई देवी लग
रही है। मुझे नहीं पता
था कि तेरा दिल इतना
साफ और अच्छा
है।

अच्छा, अब
चुप करके रोली
स्वालो। दोबारा
मुझे भैंस कहा
तो सिर फोड़
दूंगी।





पागल है आला, मगर इसके पास कलर टी. वी. स्वरीदने के लिए रुपये कहाँ से आए? कल तो यह दस हजार खड्गसिंह माँवा रहा था। अरे! कल ही इसके साथ दस हजार की रिश्वत का हंगामा भी हुआ था। ओह गॉड! कहीं इसने सचमुच रिश्वत तो नहीं ली है और अब उस रकम का टी. वी. स्वरीद रहा है। जरूर कुछ गड़बड़ है। इस पर नजर रखनी होती।



फिर खड्गसिंह ने जीप हवलदार के निकट जाकर लेकी।

मैं भी थाने ही जा रहा हूँ। आओ, जीप में बैठ जाओ।

नहीं साहब! मैं अभी ड्यूटी पर नहीं हूँ, इसलिए सरकारी वाहन का इस्तेमाल नहीं कर सकता।



हरिश्चन्द्र बनने की कोशिश न करो हवलदार! आ जाओ चुपचाप।

ही... ही... ही! आप कहते हैं तो आ जाता हूँ।



रास्ते में खड्गसिंह ने अचानक ही पूछा था—

कलर टी. वी. स्वरीदने के लिए रुपये कहाँ से आए तुम्हारे पास?

अपने पास रुपयों की कमी थोड़े ही है साहब! बैंक में अपना बहुत पैसा जमा है। दोपहर को जाकर निकानुंगा और शाम को टी. वी. स्वरीद कर घर ले जाऊंगा।



खड्गसिंह पर रोब डालने के लिए ही हवलदार ने अकड़कर ऐसा कहा था।

मगर हवलदार की बात खड्गसिंह के गले से नहीं उतरी थी। दोपहर को जब हवलदार कुछ देर की छुट्टी लेकर थाने से निकले तो खड्गसिंह भी उसके पीछे निकल आए।

देखना है, यह कौन से बैंक से रुपये निकालता है?



हवलदार एक ऑटोसिक्ला में बैठकर एगाना हो गए। इंस्पेक्टर खड्गसिंह अपनी पुलिस जीप में उसका पीछा कर रहा था।

कुछ देर बाद हवलदार का ऑटोसिक्ला गरीब ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सामने रुका।

आखिर यह ट्रांसपोर्ट कम्पनी में क्यों जा रहा है?

खड्गसिंह ने अपनी जीप दूर ही रोक ली थी।

हवलदार बहादुर ने पहले पार्किंग में खड़े ट्रकों को देखा।

वह ट्रक तो आज भी यहाँ नहीं है।

आराम हवलदारजी? ही... ही... ही...!

मैं तो आ गया, मगर वह ट्रक कहाँ है?

कोन-सा ट्रक जी? ही... ही... ही...!

छोटा है नू। मैं मैनेजर से ही बात करता हूँ जाकर। तू ही-ही करता है।

मैनेजर साहब व्यस्त हैं साहब! एक पार्टी बम्बई के लिए अपना माल बुक कराने आई हुई है। ही... ही... ही...!

... ओर सीधे दफ्तर में पहुँचे।

ओय मैनेजर! अरे... यह तो वही है।

लेकिन हवलदार बहादुर ने कर्मचारी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया...





खड्गसिंह जब हवलदार बहादुर को बाहर निकालने के लिए कारमें घुसा —

अरे! यह पेटियां कैसी हैं?



और जैसे ही उसने एक पेटी खोली—

सोना!

ओह! तो यह बात थी! हवलदार इन तस्करो को पकड़ने निकला था, मगर बदमाशों ने उसे ही काब में कर लिया!



तब तक हवलदार बहादुर को भी होबा आ चुका था।

ए...एर, आप?

तुम भी कमाल करते हो हवलदार! इन खतरनाक तस्करो को पकड़ने अकेले ही निकल पड़े। कम से कम मुझे तो बताया होता, मगर तुम्हें यह कैसे पता चला कि यह लोना वारीब ट्रांसपोर्ट के दफ्तर में है?



हवलदार बहादुर की समझ में यह तो नहीं आया कि पुलिस उनको धुंधाने कैसे पहुंच गई? लेकिन इतना वह समझ गए थे कि बदमाशों को दूढ़ निकालने का श्रेय उनको ही दिया जा रहा है। अतः वह दुर्लभ ही अकड़ गए।

इन बदमाशों को मैं अकेले ही पकड़कर अपनी चेकपोस्ट वाली गलती सुधारना चाहता था साहब!

तुमने सचमुच अपनी गलती सुधार दी है शाबाश! हवलदार बहादुर!



कमिशनर साहब ने भी अपने दफ्तर में बुलाकर हवलदार को शाबाशी दी—

इस काम के लिए तुम्हें इनाम दिया जाएगा हवलदार!

तो फिर मुझे इनाम में एक कलर टी.वी. दिला दीजिए साहब! यह सब उसी की बदौलत हुआ है।



ओ.के.! ओ.के.!

फिर उसी शाम हवलदार ने एक से वह रुपये निकालकर गरीबों में बांट दिए थे।

समाप्त

आगामी अंक में हवलदार बहादुर का एक और सनसनी खेज हंगामा

हवलदार बहादुर और नवाब का घोड़ा

